पद १९८

(राग: खमाज - ताल: त्रिताल)

कृष्ण हरी मधुसूदन माधव। गोवर्धन गिरिधारी रे।।ध्रु.।। नारायण श्रीअनंत अच्युत केशव कुंजिवहारी रे। श्रीधर वामन मुकुंद गोविंद मुरलीधर मुरारी रे।।१।। ध्रुव प्रल्हाद व्यास पराशर नारद कीर्तन गायी रे। अतिपापी अजामिळ गणिका नक्र गजेंद्र अंतर्ध्यायी रे।।२।। आपही ठाकुर आपही दास आपही सब घटवासी रे। माणिक के प्रभु अंत न जाने अमर रूप अविनाशी रे।।३।।